पाठ - 24

बाल गंगाधर तिलक

सन् 1857 की क्रान्ति भारतीय इतिहास में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इस क्रान्ति से एक वर्ष पूर्व 1856 में 23 जुलाई को भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित रत्नागिरी के एक गाँव में बाल गंगाधर तिलक का जन्म हुआ।

तिलक के पिता गंगाधर राव पहले एक स्कूल के अध्यापक थे और बाद में प्राथमिक विद्यालयों के निरीक्षक बन गए थे। तिलक को पिता से विद्या और माता से धार्मिक भावना के संस्कार मिले थे। जब वे पुणे के सिटी स्कूल के छात्र थे तब कक्षा में शिक्षक द्वारा दिये गए गणित के प्रश्नों को कापी पर न करके वह मौखिक ही हल कर देते थे।

दस वर्ष की आयु में माता की छाया उनके सिर से उठ गयी और सोलह वर्ष की आयु मंे पिता चल बसे। जो कुछ धन उनके पास था उससे छोटे भाई, भतीजों को उन्होंने शिक्षा दिलायी। उन्हें अत्यंत आर्थिक संकट में दिन गुजारने पड़े फिर भी बाधाओं को झेलकर वे आगे बढ़ते गए।

तिलक का विवाह बल्लाल बाल की पुत्री तापी बाई से हुआ। 1877 में उन्होंने बी0ए0 परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। दो वर्ष बाद एल0एल0बी0 की उपाधि भी प्राप्त की।

तभी से तिलक ने अपना जीवन सार्वजनिक सेवा के लिए अर्पित कर दिया था।

तिलक एक आदर्श शिक्षक और सफल पत्रकार थे। सन् 1879 में उन्होंने अपने दो अन्य मित्रों के साथ ''न्यू इंगलिश स्कूल'' की स्थापना की। यह स्कूल राजकीय विद्यालयों से भी उत्कृष्ट शिक्षा देने और राष्ट्रीय विचारों वाले सच्चे, देशभक्त तैयार करने के उद्देश्य से खोला गया था। चार वर्षों में ही छात्रों की संख्या 1009 हो गईं

सन् 1881 में तिलक की सामाजिक सेवा का दूसरा दौर चला। उन्होनंे मराठीभाषा में 'केसरी' समाचार पत्र का प्रकाशन किया। अंग्रेजी भाषा में ''मराठा'' पत्र भी साथ निकलने लगा।

यद्यपि तिलक सन् 1885 से ही सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगे थे तथापि राजनीति में वे पहले सन् 1889 में आये। इस वर्ष उन्होंने मुम्बई में आयोजित कांग्रेस तथा मुम्बई प्रदेश कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। यह संवैधानिक आन्दोलनों का युग था। समाज सुधारकों का दल अंग्रेजों का तीव्र विरोध नहीं कर रहा था, परंतु तिलक जनता को उत्तेजित कर खुलकर विरोध करने के पक्ष में थे।

तिलक के प्रस्ताव पर ''दक्षिण शिक्षा समाज'' नामक संस्था बनायी गईं तिलक पहले राजनीतिक स्वतंत्रता चाहते थे, फिर समाज सुधार किंतु उनके मित्र समाज सुधार को प्रथम स्थान देते थे। इसी बात को लेकर मित्रों में मतभेद हुआ और तिलक ने ''दक्षिण शिक्षा समाज'' से त्याग पत्र दे दिया।

कांग्रेस के सदस्य यद्यपि मिल-जुलकर काम करते थे तथापि उनमें भी मतभेद शुरू हो गए थे। सन् 1907 में कांग्रेस का अधिवेशन सूरत में हुआ। इसमें कांग्रेस के सदस्यों मंे ही परस्पर फूट पड़ गयी और कांग्रेस दो दलों में बँट गयी-उदारवादी दल और उग्रवादी दल। गोपाल कृष्ण गोखले उदारवादी दल में थे और तिलक उग्रवादी दल में। तिलक उस समय की अन्याय और अत्याचारपूर्ण व्यवस्था में शीघ्र परिवर्तन लाना चाहते थे। वे बार-बार राजनीतिक स्वाधीनता और विदेशी माल के बहिष्कार के संकल्प दोहराते थे किंतु उदारवादी दल के सदस्य तत्कालीन नियमों में ही सुधार के पक्षपाती थे।

तिलक पर अंग्रेजों द्वारा कई बार राजद्रोह का आरोप लगाया गया। इन पर राजद्रोह का पहला मुकदमा ''केसरी'' में प्रकाशित उनके लेख ''वीरपूजा'' के कारण चलाया गया था परंतु न्यायालय के निर्णय के बाद भी तिलक ने यही कहा कि ''मेरे लेख से राजद्रोह की कोई झलक नहीं मिलती। मैं निर्दोष हूँ।''

न्यायालय द्वारा उन्हें 18 माह की कठोर सजा दी गईं जनता ने इस दण्ड को ‘‘न्याय की हत्या’’ घोषित किया और उसकी निंदा की। कई अंग्रेज तथा भारतीय विद्वानों ने तिलक की रिहाई की माँग की और निश्चित तिथि से छः माह पूर्व ही उन्हें रिहा कर दिया गया। इस बीच उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। सरकार की तिलक पर कड़ी नजर थी किंतु तिलक भी राजनैतिक स्वतंत्रता पाने के लिए कमर कस चुके थे। देश के नवयुवकों का समर्थन व सहयोग उन्हें प्राप्त था। कोलकाता मंे होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर एक सार्वजनिक सभा में गीता पर उनका भाषण सुनकर छात्रों ने उन्हें मानपत्र दिया तथा उनका निदर्शन प्राप्त करना चाहा। तब से वे ‘‘लोकमान्य’’ कहे जाने लगे।

सन् 1908 में उन्होंने नशाबन्दी आन्दोलन चलाकर सरकार की आबकारी नीति का विरोध किया। इसी प्रकार नमक पर कर का भी उन्होंने विरोध किया। गांधी जी का नमक-सत्याग्रह भी इसी समय प्रारम्भ हुआ। महाराष्ट्र की जनता इस समय नमक कर से बहुत असन्तुष्ट थी।

तिलक बड़े दूरदर्शी थे। वे जानते थे कि कांग्रेस के केवल पढ़े-लिखे तथा धनी वर्गों तक ही सीमित रहने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं होगा। वह देश की स्वतंत्रता चाहते थे। यह तभी सम्भव था जब कांग्रेस को आम जनता के साथ जोड़ा जा सके। उन्होंने साधारण जनता की आवश्यकताओं को ध्यान मंे रखकर अनेक कार्यक्रम चलाये। गणपति उत्सव तथा शिवाजी उत्सव इन दो सामूहिक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने भारतीय जनता में आत्म-विश्वास जाग्रत किया और उनका मनोबल बढ़ाया। ये उत्सव ही राजनैतिक चेतना के केन्द्र बन गए। उन्हांेने धार्मिक उत्सव का आधार लेकर राजनीति की जड़ें मजबूत की। इस प्रकार तिलक को स्वदेशी आन्दोलन का सच्चा जन्मदाता कहा जा सकता है।

सन् 1908 मंे, केसरी में उनका एक लेख छपा ‘‘देश का दुर्भाग्य’’। इस लेख के कारण उन पर फिर राजद्रोह का आरोप लगा और उन्हें छः वर्ष की सजा भोगनी पड़ी। तिलक पर लगे राजद्रोह के झूठे आरोप को सुनकर भारत के मजदूरों ने छः दिन की हड़ताल की। भारत के मजदूर आन्दोलन के इतिहास में यह प्रथम हड़ताल थी। तिलक को बर्मा (म्याँमार) के माण्डले जेल में भेज दिया गया। जेल में तिलक को एकाकी जीवन बिताना पड़ा। वहाँ उन्होनंे ‘‘गीता रहस्य’’ नामक विश्वविख्यात पुस्तक लिखी। इस पुस्तक ने देश की राजनीति को स्वराज्य की ओर उत्प्रेरित किया। तिलक ने जनता को बताया कि कर्म का राष्ट्रीय फल ‘‘स्वराज्य’’ है।

तिलक में असीम सहिष्णुता थी। देश के लिए उन्होंने अनेक यातनाएँ भोगीं। जब वह माण्डले जेल में थे तभी उन्हें अपनी पत्नी के निधन का तार मिला। उस समय उन्होंने अपने

बच्चों को आश्वासन भेजा कि जब स्वयं उनके माता-पिता की मृत्यु हुई थी तब वे बहुत छोटे थे। अतः बच्चों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए और अपना समय शोक में नहीं व्यतीत करना चाहिए। उन्हें साहस के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए।

जेल से छूटने के बाद वे पुनः देश सेवा में लग गए। उन्होंने जनता को स्वशासन की प्रेरणा दी और होमरुल लीग की स्थापना की। वे देश में अपना शासन और अपनी व्यवस्था चाहते थे। सन् 1906 में मुस्लिम लीग बन चुकी थी और विदेशी शासन उसे कांग्रेस के विरुद्ध भड़का रहा था। श्रीमती एनी बेसेन्ट कांग्रेस में सम्मिलत हो गयी थीं। होमरुल लीग की विधिवत् स्थापना 28 अप्रैल 1916 को हुई। वास्तव में यह कार्य तिलक के राजनैतिक जीवन की महान सफलता का द्योतक था। इसी समय कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ। इस समय तक उग्रवादी और उदारवादी दोनों दलों में समझौता हो गया था। उदारवादी धीरे-धीरे कांग्रेस से हट रहे थे और कांग्रेस में तिलक का प्रभुत्व जम रहा था। मुस्लिम लीग से भी कांग्रेस का समझौता हो गया था।

भारत की राष्ट्रीय भावनाओं को ब्रिटिश लोक पक्ष के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए तिलक इंग्लैण्ड गए। इंग्लैण्ड में भी तिलक ने पूर्ण स्वराज्य के लिए अनेक सभाओं का आयोजन किया। उन्होंने अनेक हैण्ड बिल भी प्रकाशित कराए। ब्रिटिश सरकार ने परिस्थितियों से घबड़ाकर रोलेट एक्ट पास किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में भाषण तथा संगठन की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया। गांधी जी ‘‘रोलेट एक्ट’’ को सहन न कर पाये और उन्होंने इसके विरोध में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। इंग्लैंड में तिलक को जब यह समाचार मिला तो वे तत्काल भारत लौट आए।

मार्च 1919 में रोलेट एक्ट लागू हो गया। पूरे देश में इसके विरुद्ध नारे लगाए गए। दिनांक 6 अप्रैल को विभिन्न भागों में हड़तालंे हुईं और प्रदर्शन किए गए। पंजाब में इसका विशेष विरोध हुआ। प्रमुख कांग्रेसी नेता सत्यपाल तथा सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार किया गया। इसके विरुद्ध जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल को एक सभा हुई, जहाँ अंग्रेज अफसर जनरल ओ डायर के आदेश से अचानक गोलियाँ बरसायीं गईं और निकास द्वार बंद कर दिया गया। फलतः भीषण नरसंहार हुआ। सर्वत्र हाहाकार मच गया। कांग्रेसी नेताओं ने इस हत्याकाण्ड की घोर निंदा की।

तिलक पूर्ण स्वराज्य हेतु निरंतर संघर्ष करते रहे। लगातार अथक परिश्रम, मांडले जेल की यातना और फिर इंग्लैंड की ठंडक ने इनके शरीर को जर्जर कर दिया था। ये रुग्ण रहने लगे। जुलाई 1920 ई0 के प्रारंभ में उन्हें मलेरिया हुआ, अंतिम सप्ताह में निमोनिया हो गया और उनकी दशा बिगड़ने लगी। बुलंद आवाज मंद पड़ने लगी। दृष्टि और श्रवण-

शक्ति मंद हो गईं सभी उपचार निरर्थक सिद्ध हुए। अंततः 1 अगस्त 1920 को भारतीयों को पूर्ण स्वराज्य हेतु उत्पे्ररित कर भारत माता का यह सपूत सदा के लिए सो गया। इनकी मृत्यु के अवसर पर जनसमूह की बाढ़ को देखकर विट्ठल भाई पटेल ने कहा था-

‘‘राजनीति को आराम कुर्सी वाले राजनीतिज्ञों से जनता तक ले आने का श्रेय लोकमान्य तिलक को ही है। उनकी उँगली राष्ट्र की नाड़ी पर थी। वह जानते थे कि स्वतंत्रता संग्राम में त्याग और कष्ट झेलने की क्षमता जनता में कितनी है। इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाया। वे सच्चे अर्थों में भारत के निर्माता थे।’’

अभ्यास

1. बाल गंगाधर का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

2. बाल गंगाधर तिलक स्वराज्य के मंत्रदाता थे, इस कथन की पुष्टि कीजिए।

3. बाल गंगाधर तिलक ने किन पत्रों का संपादन किया ?

4. भारत की स्वाधीनता के लिए तिलक के योगदान का वर्णन कीजिए।